

हस्तजगपद ॥ ॥ स्म शानविषमया कोसहदेविकोडोदोतवावतु
नदुवायावधामविजगपद ॥ ॥ अथार्थ ॥ ॥ स्म शानविषमया कोडुवाका
विजगद ॥ ॥ स्म शानदुगि का मूल शिवाय सतजग ॥ ॥ अथार्थ ॥ ॥
कोडुदिको मूल शिवाय सतजग ॥ ॥ अथार्थ ॥ ॥ अथार्थ ॥ ॥
क्षदापिडाकारयवसमातिके ॥ ॥ अथार्थ ॥ ॥ अथार्थ ॥ ॥
कोविताग रिमातिगर्नु ॥ ॥ अथ प्रतापलके अथार्थ ॥ ॥ अथार्थ ॥ ॥
भागैकं सजो विमिश्रं सुताम्रगंधो यगालोह संयवयोपलाभम विषमृष्टं ॥ ॥
भाग १ पागे भाग १ अं मुके ३ गंधक भाग ४ सर्व भाग ४ मायो शावृ माग १ ६ शंख भाग १
ला को भस्म भाग १ विषये तिसव यो विले के योग रिपि सव मसिनु गर्नु मावति २ गर्नु अमि
इफल शित अनुपान गर्नु महि भात पथ यावु ॥ ॥ पुसु निवातानि नदंत वद माद्रावु ना दोर मुस
निपाताव ॥ पुसु मृताडु वृ फलायु तीयंग दा रु गं न ह्व मितो निहंति ॥ ॥ निजावु पागे निज प
थं मुक्तं सर्वाति सारयह निगदाश्च ॥ प्रतापलके अथार्थ ममध्ये यतत प्रयुक्ती गिरिज युता ॥
॥ निजावु पा नले सर्वा निसारकनहर ॥ सयहति कनहर पुसु निवायु कणहर अदुवाका सशि
तयाया सनिपातहर ॥ गुगुलु गुर्जी अदुवा विपला शित याया गुदाद्वार की रोगहर ॥ प्रताप
के अथार्थ सपार्वतिलै रूपा को हो ॥ ॥ इति प्रतापलके अथार्थ ॥ ॥ रुडु फलै
हाग यो चितं ॥ अनेन नामि संले पा सर्वाति सा ॥ ॥ अथार्थ ॥ ॥ अ

कोट्टदयानि पसिकनना मिले पगर्वुसर्वे अति सार केना सहो ॥ ॥ इति
 यथ आग्रिकु पाशोऽस ॥ ॥ ऐदु गधो सहत कने शासमं विषयो ज्वमिह विमो
 णसु गुणं विषये कपदे शया वयिते त्र भाग ॥ ॥ जे विर निरो गारहः सुपुष्ट सिद्धे
 नामा विमु चिकार्य दुस मिश्रा नैदु यो दि गुं ज प्र मि तो र्मेदु ॥ ॥ अस्यार्थ
 सा के भाग र्था ग भाग ३ विष भाग ८ म र्वा पो त्या को को जपो
 राग वातु लो ग रि च ल गु र्वा मि र का अ मि लाले दिन य क मि जा
 ॥ इति अग्रिकु पाशोऽस ॥ ॥ विमु चिकार्य विषे दिनु पां दु रोग विषे दिनु
 रोप विषे दिनु र निर कि मा वा गनु ॥ ॥ नरो धनु हर्षे शुभे म र्वा पि पला सह ये ति अ
 पु पान सि त भ स्म पा शो या तु वां ति हर किं वा ना ग के सा को पू ला शत पि सि पा नि सि त वा तु
 ता ति था म अ प को को ड लो लो ग अ ले वि पि प ला का पि थ ए ति वृ र्ण ग रि ध नि आ का पा नि शि
 ते या तु द्द दि हर मि म ल को यो टो वा क रा को दु द पि सि ना मि ले प ग र्वा ति सार हर ॥ ॥ अ
 थ प रा मृ त ॥ ॥ क र्म सा अ ध क स्र थै व वि म र्वा ज्व ले स म मे व ता व त् ॥ द द्या त्था ता
 प्य म यो र ज श्व ग ये न वा ज्ये न वि मृ स कि चि त् ॥ ॥ शा रा व रु क्म थ मृ दो मृ द्य त प मृ द्द त स
 र्व म मि प्र य ना त् ॥ ॥ शु प्र पूर्णो पि धाय या त्रे त दे व या त्मु मृ द्य प लि य त् ॥ ॥ मं द मं द ब हि
 न ये रा व त्या मा ना त्र ये सा ग शि त ॥ ॥ ग्रामं दे य र कि के यं प्र य त्ता त्या व त्मा ना धि के मा
 वा व हे दि य न ह ति रो ग म् ॥ ॥ प्रो म्मा द कु द्या र्शी रो गा न् ॥ ॥ इति सा स्र सा ति सा ज्व र

च प्रोद्यद्वाचैग्रहाणामवाश्व॥॥ अथाह पंचासृतनामसमवेद्योऽस्मि
 रि॥ वाताशंकुष्टश्चपथुत्रहपात्सयोगयुक्तं सवताविकागन॥॥ एकैकै
 र्यमृकैकैत्रगारिठगामादावतगर्भुनवगाडकाघृतनेथोकैमुदतुतव
 अर्कासरावलेटाकिटिनुवादिमातिकपरालेमुदिनुशुकाडकापातयो
 योननुसागसितनभयाधिकनुयकानिमात्रागर्भुअपिवहा
 मादोगकनकुष्टरोगकनहसाकनशोथकनचनिसारकन
 तुमृतरसक्षयरोगकाहासपूजाविकारह॥ इतिपंचासृतस॥॥ अथअगति
 थुद्वंसगंधकहिगुलंचसमानभागभियजस्युज्यात्सदुभागयुक्तं कनकाथनिज
 दद्यादहिपेनयुक्तं॥॥ सर्वमेकिकुत्रदद्याद्गैकममृतस्यच॥ अगतिरसनामास्यसुसिद्ध
 सोत्तमः॥॥ सक्षयेदतिकामात्रजिजातिफलैसह॥॥ अट्प्रकारमतिसारदुनिवारविवाशयते॥ म
 रिचघृतसंयुक्तं प्रवाहिकापिनाशयते॥॥ अस्यार्थः॥॥ थुद्वपोथुद्वगंधकहिगुलयेतिममभा
 दधतुराकाविजभागअकिमृत्सर्वैकगतागारिपकभागवधिगुलयेतिममभा
 ठागारिखनगर्भुएकानिकोमात्रागर्भुजिजाडफलकोअनुपानगर्भुद्वैप्रकारकोअतिसारदुनिवा
 रकनमासगामरिचघृतसंयुक्तं प्रवाहिकासगर॥॥ इतिअगतिराजस॥॥ अर्थद्वि
 यअगतिरस॥॥ एकैकासगंधचदरदशैकभागिकंअहिपेनस्यचत्वारोतथाधतुरजस्यच॥॥ अ
 मृतस्यैकभागंचसर्वसंयुक्तंमेकत॥॥ अगतिरसगजायाजिजातिफलैसह॥॥ अक्षय
 तिकासात्रसर्वातिसारनासयत्॥ मरिचघृतसंयुक्तं प्रवाहिकाम्॥॥ अस्यार्थः॥॥

वतुगैभाग १ अतिमविकटुका चूर्णासमभागरिपानशितवाचवातातिमार
 गाहर ॥ ॥ कृष्णकृष्णमन्तिलोदतशर्कराचूर्णमिश्रित ॥ आज्येनपचयामितमवोक्तनिहत
 अम्यार्थ ॥ ॥ कालातिलकोचूर्णाद्याडमुद्दिगाडकाद्युतदृढशितवाचुनकोरक्तधाम ॥ ॥ अमया
 यादिगुणवासिधुसुवर्चन ॥ चूर्णासुष्णा मसपिनमामशेष्यातिमजित ॥ ॥ अम्यार्थ ॥ ॥ भाग १ अतिम भाग
 १ दर्श भाग १ हि भाग १ वोशे भाग १ सिधो भाग १ निपातृ नयेनसर्वेचूर्णमिश्रित ॥ ॥ अतिमवाच
 तिमारहर ॥ ॥ यवानिधातकिपुष्पमार्दकशालमिरसमथीते ॥ नममयुक्तस
 रे ॥ अम्यार्थ ॥ ॥ भाग १ आनु भाग १ फगना काफूल भाग १ आद्रक भाग १ सिमन कोरसमेवमा
 पानिसितवाचुसर्वातिसारनासवगर ॥ इतिवातपित्तस्मात्तिसोर ॥ ॥ अर्थ आमदमैरवोरस ॥ ॥ हिगु
 वत्सनागचमरिचटकशांकशा ॥ मर्दयेतसमभागेनरसोआनंदमैरव ॥ ॥ गुजैकवादिगुनवावत्
 शात्वाप्रयोजयेत् ॥ मधुनलेहयचातुलकुचस्पतवाफल ॥ ॥ चूर्णीतैकर्विमात्रतुत्रिदोबोत्यातिमार
 जित ॥ दध्यन्नदापयेत्तथ्यगवाजेनक्रमैवव ॥ ॥ जिक्केनसमायुक्तैफजिशाकवदापयेत् ॥ पिपासा
 याजलदैयविजयावहितानिशि ॥ ॥ अम्यार्थ ॥ ॥ भाग १ दुग्धुल भाग १ विष भाग १ मरिच भाग १
 पिपलासमभागः गरिमर्दमगर्बुदुडानिकिमात्रागर्बुनिर्वलकनपरानिकिमात्रागर्बुदुडवक्वक्षकि
 त्वाकिंवाडुदुयवचूर्णागरिमहिमिअनुपानगर्बुपर्कर्कर्वमात्रालेत्रिदोयनेमयाकोअतिमार
 कशाहरदहिभातपथ्यादितुगाडकोमहिअर्थवावाकिंकीदुटकीमहिदितुवपामिनाकोसाक
 दिउत्रिया मयाशिततजलटितुवितयापनिचवाठतुअतिमारहर ॥ ॥ इतिअतिमारोआनंदमै

अथ यि ताति सा रे लक्ष नमः ॥ ॥ अथ यि होम लोपितो निलो वापि द्वा र्तिः ममो नि
वश्यो यि ताति सा रे लक्ष नमः ॥ ॥ अथ यि ॥ ॥ अथ यि दाहो पित मल हो कि वा निलो हो वृ
हो यि वि हो म म हो एति पि ताति सा रे लक्ष नमः ॥ ॥ इति युति सो ॥ ॥ अथ स ग्रयो म पि
ताति सा ॥ नाग एति वि या मृ ता भू नि वा मृ त र्त्त के ॥ ॥ सर्व न र द्वा का थ सर्वा ति सा र ना श न ॥
॥ अथ ॥ ॥ अथ ॥ भाग १ अति स भाग १ मो व्या भाग १ क गा ति तो भाग १ गु र्जो को द्दु द भाग १
॥ यथ को क थ या नु सर्वा ति सा र ना म ग र सर्व न र ना म न ग र ॥ ॥ इति म पि च्चा दि चूर्णा म ॥ ॥
॥ अथ यि वे नि व र्णा म रि च जं य दि ॥ चि त्तो र्च लो पे त य ह गि त स न श्य ति ॥ ॥ अथ यि ॥ ॥
॥ अथ यि चूर्णा म सर्व यो चितो वि या तू न नै यु क्त म हि मि त पि नु स्य ह ति ह र ॥ ॥ इति स ग्र ह रा या
॥ म ठा ति वि या प ध्या र्चै द्र य व र्णा क म ॥ वा रि पि त नि द्यै य ग्र ह गि त स न श्य ति ॥ ॥ अथ यि
॥ ॥ भाग १ हिं ग भाग १ अति स भाग १ ह र्गो भाग १ वी र्गो भाग १ द्दु द य व र्ति यो य ध व र्णा ग पि
पा नि श त या नु वा त ले म या को र्ग ह गि ह र ॥ ॥ इति ग म ठा दि चूर्णा वा त स ग ह नि ॥ ॥ अथ
॥ अथ यि व चो शुं ठि वि त्त वां य मु र्णा क पि त मु द्ध म म शा द ति गृ ह गि वा त स भ वा त ॥ ॥ अथ यि
॥ ॥ भाग १ सा त व र्णि भाग १ वी र्गो भाग १ शुं ठो भाग १ वे ल को फ ल भाग १ ध नु म सि नु वृ
र्णा ग रि ता ता पा नि मि त पि नु वा त स ग ह गि ह र ॥ ॥ इति वा त स ग ह गि पो गे ॥ ॥ अथ यि त
॥ अथ यि त ल क्ष णा ॥ ॥ निल पि तो थ दु र्गो म ल पि डा गु दे ह दि दा हो रु वि द्वा ति ह पि त म
॥ ॥ अथ यि ॥ ॥ अथ यि ॥ ॥ निलो म ल हो कि वा पि त व र्णा हो गु द्वा द्वा पि डा ह द य वि

येपिडाहो दाहहो अरुवि होरनिविद्रुपितसंग्रहणिकाहुत॥ ॥यथवाविष्टं भवे
 होरक्तपागुदपिडाहोआमरुक्तहो॥ ॥यथकटुकादिवर्णाम्॥ ॥कटुकिचयवापि
 जत्वकासाजत्र॥धातकनानिविद्याशुठिमुत्तासंसर्गमेकत॥ ॥पित्तसंग्रहनिहति
 नासहभक्षितम्॥ ॥अस्यार्थ॥ ॥भागवकटुकिभागवड्डयवभागवपाथि
 इडकिवचभागवसाजत्रभागवधाइराकोपुलभागवयुनिमभागवशुठोभागवमे
 तिसर्वैरुक्तगगिरिमसीनुगगिरिपित्तनुमहिशितमुद्रियातुपित्तसंग्रहणिक॥ ॥यथसंग्रह
 णिलक्षणां॥ ॥दुर्गविशितलपादुपिद्रुलोमंदवेदनःमलस्यादितिविद्रोयोश्लेष्मात
 रलक्षणां॥ ॥अस्यार्थ॥ ॥मलदुर्गविशितलहोपादुवर्णाहोविफलोहोपिडामंद
 हो॥ ॥इतिश्लेष्मातिसारलक्षणां॥ ॥यथाशुठिकणावद्रिबूर्धमेवांसंसांसतकफ
 पित्तदुतहंतिग्रहणितिवेदनां॥ ॥अस्यार्थ॥ ॥हरितकिभागवशुठोभागवपिपता
 भागववितोसमभागवर्णागगिरिमहमितयातुवडिवेदनाकोकफपित्तसंग्रहणिक॥ ॥
 शात्मलिशुक्लिर्यासहिरुपथात्रयंसमम्॥तक्तपित्तनिहत्येवग्रहनिश्लेष्मसमवास
 ॥ ॥अस्यार्थ॥ ॥सिमलकोयोतोहिगहरितकिभागवशुठिसमभागवगिरिवर्णामहिसि
 तयातुश्लेष्मादेविमयाकिसंग्रह॥ ॥यथवाटपित्तसंग्रहतलक्षणां॥ ॥अस्यार्थ॥ ॥अ
 दुर्दिमुखचविरसमेवेत्॥ ॥ददतःवेतिस्मात्मायेग्रहणिलक्षणांमेवेत्॥ ॥अस्यार्थ॥ ॥अ
 महीतृष्णाहोअरुविहोवातिलोमुखविरसहोरतिसंग्रहणिलक्षणांहुत॥ ॥मुहुमुहु
 र्वतिगृहंतिचमुहुमुहु॥ ॥ग्रहणोचेतिवक्तव्यावातपित्तद्विदोयजा॥ ॥अस्यार्थ॥ ॥०

मन्त्रपुत्र-धामिजा-योमगद-प्रिकहिद ॥ ॥ वातपित्तद्विदोयजदो ॥ ॥ अथ
 विदुम ॥ ॥ हस्तयोपादया-कंयतालु-शोयशिरोयेथा ॥ ॥ आसमृद्धी-गुटेकु-क्षोजउ
 तेवदना ॥ ॥ मलश्याम-सपे-त्रचजायते-चपुनपुन ॥ ॥ वातो-थकहशि-विदुमिद-मुबुवि
 ॥ ॥ अथार्थ ॥ हातपाउका-मनतालु-शुविआवा ॥ शिरस्यथा-हो-आसहो-मृद्धी-आव
 रविसे-पेतविसे-अतिवेना-हो-मलकालो-हो-गाजपनि-हो-पवट-पवट-दिमा-जावु
 नन-हो-वातदे-यि-अ-का-सगद-प्रिक-को-विदुहो-मनि-विचक्ष-गावै-घले-मे-द्वगु ॥ ॥ इति-ग
 त-गुद-गि-विदुम ॥ ॥ अ-हो-मगद-प्रिक-विदुहानि ॥ ॥ आसो-रु-विजल-वके-री-मा-ची-थ-गु-म
 र-मा ॥ ॥ हो-मगद-प्रिक-विदुहानि-अ-चे-स-विदो-यज ॥ ॥ अथार्थ ॥ ॥ आसहो-अ-रु-विदो-मु-म
 विदेषानि-आवरो-मा-च-हो-गुडा-द्वार-म-हो-वडा-हो-मगद-प्रिक-ग-त-आ-न-त-दु-लो-द-क-पान-त
 ॥ ॥ अथार्थ ॥ ॥ चौला-डु-का-ज-रा-म-ह-मि-त-पि-सि-या-तु-चै-ला-गि-सु-तु-पा-त-पि-तु-र-क-सा-व-ह-र-
 म-हि-मा-द-धि-सा-री-ग-मु-का-वा-ल-स्य-मू-लिका ॥ ॥ गद-प्रिक-ह-ति-वे-गे-न-प-थ-शिल-स्य-दे-हि-न ॥ ॥
 अथार्थ ॥ ॥ मे-सिका-द-हि-सि-त-अ-र्थ-वा-नो-नि-सि-त-व-लु-को-ज-पि-सि-या-तु-चो-डे-गद-प्रिक-ह-र-
 ॥ ॥ प-थ-शिल-दे-हि-को ॥ ॥ वि-ल-ह-ग-य-सि-द-सि-वा-मो-च-र-सा-वि-त-म ॥ ॥ श-क-हा-वु-गी-स-
 यु-क्ते-र-का-ति-सा-प-ना-स-न-म ॥ ॥ अथार्थ ॥ ॥ वे-ल-को-चा-ना-वा-कि-का-दू-द-मा-प-का-दू-वा-तु-सि-
 म-ल-को-यो-तो-द-दु-व-व-र-ति-औ-य-ध-वु-गी-ग-रि-आ-र-का-ति-सा-प-ना-स-ग-र ॥ ॥ अथ-ग-ग-र-जै-शे-व-
 र-प्र-दि ॥ ॥ भोगा-शुद्ध-र-स-से-को-य-स-मा-भा-श-क-द-य ॥ ॥ र-स-तु-त्य-शि-वा-वु-सी-ग-ंध-क-

म्रुसगातथा॥ ॥ विवृणोथ प्रयत्नेन भावयेत्सप्रवाकम् ॥ तावुलिटल तो नत
 वै ॥ पिष्टाचरा मिता कार्या ह्यथा शुक्लाथ गोलिका ॥ ॥ भाग १ शुद्ध पारि भाग १
 ग्रामल कि वृणा भाग १ गंधक भाग १ त्रिकटु विसेय गरि पय न ले चूरा गरि शात १ वर
 का पात कार सले भावना दिवुत सेध तूर का विज कार सले शात १ वर नावना दिवुत वर
 दुरा का गेरा वरा वरि तुत्पाड ह्या शुभ गे लिगनु ता ता पानि शित यात्रु यति गुगागरा ॥
 मोयुत राज शेर वर विमं क मि निर्ग शिनि ॥ नाना कार महा जरा शला निशेय शूल
 ॥ पादु व्याधि रोग हरा महोदय जलं धरा रोग हर शुल कन हर कृत्वा कन हर वायु को ना
 से क रोग कन हर ॥ ॥ इति राजा जेश्वर वर वि ॥ ॥ अथ मत्त सी जिव निरस ॥ ॥ द्वि भाग त्रि
 कटो श्वैव भाग द्वि विष स्पतु ॥ त्रि भाग द्वादशैक भाग रुक गाक स्पतु रति र्क वरि मर्दन
 गर्तु मर्दन कार सले मर्दन गर्तु तथा शुद्ध वा कार सले तथा चिता कार सले ता धापी पल ज
 रिकार सले मर्दन गर्तु रति भाग गर्तु मृत सं जीवति नाता स स नी पात ज्वर कुस ॥ ॥ अथ
 प्रदोषोपाय ॥ ॥ तडला मोयुता पिता वला या कटु लि फलं मृगा द्वि यो चिता यो नौ गत ह्मा
 वम निदुत म् ॥ ॥ अम्यार्थ ॥ ॥ चैला निशित वतु को चूर्ण कटु लि फल या वृक्षी का यो
 निदे विरव स्या को रक्त चाडौ धाम ॥ ॥ दुग्ध पित्त वला मूलं मेघ नाद ज टा थ वा तं दुला गो
 मधु मि श्रां पिता यद र ना सिनि ॥ ॥ अम्यार्थ ॥ ॥ दुग्ध शित वतु को ज चूर्ण गरिया तु दि
 वा चैला ड का जटा चैला निशित मधु घालि पिबु म् दर म चा को यत री ना म गर ॥ ज चुर

[illegible]

वेष्मादियो धितागर्भकत निवर्गागरा ॥ अथ वध्या करगाम ॥ शास्त्र
 मवृक्षोक्षपक्षवे ॥ अतु कालेन हपित्वा वध्या नारि प्रजायते ॥ शिमल कापू
 पक्षवपि सि अतु काल विषे पानि शितति न दिन पितु नारि वंध्या हो ॥ गहलिय क
 पित्वा तदुल वारिणा ॥ अतु अह पित्वा नारि वंध्या प्रजायते ॥ अथ ॥ अथ
 जग अतु काल विषे तिन दिन पितु सि वंध्या हो ॥ अथ गभ रक्षा गाम ॥ सम
 ता युक्त शालि नदुल चूर्णकम् ॥ उदुवरि शि फा चूर्ण पितो गभ रक्षा ॥ अथ
 शालिका वा वल् को चूर्ण सम भाग या उदुमरिका शि फा को का थ पितु गभ रक्षा
 पततं स भये दुर्भ कुलाल कर मृति का मधु ह्य गि पय पित्वा किं वा श्वे ता टिक र्णिका ॥ अ
 म्पार्थ ॥ यम दाग र्भ कन कुमाल का हात लापा को मा टो म हवा कि को दुद पितु स भ म
 हो किं वा श्वे ता टिक र्णिका श्वे ता पग जीता मधु मे डि को दुद शित पितु स भ न हो ॥ गभ
 शि गभ र्भ तो रक्त स भयंति पतदुतं पा रा व त म ल पित ज्वर तं दुल वारिणा ॥ अम्पार्थ ॥ ग
 भि निका गु र्भ दे शि रक्त आ ड टेर वत परे वा को म ल वौ ला नि शित तिन दिन पितु य श दो ल
 म गा हो ॥ अथ मुख प्रस वो पाय ॥ दिग्गु मे धन स युक्त स प्र का जिक पा न स्त्री प्रसू ते को
 वदु मूले वा मा तु लु ग के ॥ अम्पार्थ ॥ दिग्गु सि धो न ता तो द हि को का नि पि तु स्त्री प्रसू ति हो
 ॥ किं वा वि मा की न री क ज वा ध उ मु यु प्रसू ति हो ॥ प्रा ग पा मा र्ग मू ला भ्या यो नि स भ्ये नि ले
 प ना तु प्रसू ति जा य ते शि व स रं दु प्र स व सि य ॥ अम्पार्थ ॥ अया ना र्ग का ज रा पि सि
 यो नि ले य ग र्दु प्र स व सु रिले वा डे प्रसू ति हो ॥ देव दारु लि स चूर्ण तु क र्भे के तो य वे सि त

पर्वकारिगर्भोपनिषद्शास्त्रं ॥ अस्याथ ॥ ॥ तितविण्णकोचूर्णपानिलेपि
 ॥ ततपिनुतक्षरोगर्भसम ॥ प्रसुतिकरिववाकदलिसलिकाकेडे ॥ कदलिकोजरैकं
 ॥ धनुस्तवप्रसूतिमे ॥ ॥ पुनट्टपादिनिर्भोकमसिमधुसमविते ॥ पुरिताक्षीतयासूट
 ॥ गमभिविजवति ॥ ॥ अस्यार्थ ॥ ॥ सपेकि काबुलिमाटा कामी सडा घालिपोर्नेतशिभिकि
 ॥ ॥ मितमुट्टुनेत्रमरियजगागर्भ ॥ मूढगभासीमूढगभंकनसमानमचाकोषनिस
 ॥ ॥ जजरिकुततेलद्वयोमू ॥ मूलिकाचुपिधृतायोनिमुवेरामाविशुष्याकुनेक्षणा
 ॥ अस्याथ ॥ ॥ वर्याभूमकोजरोकटिकनतेलमा मिजाउवतवस्रिकायोनिविसेराम
 ॥ ॥ तिरिविसत्याहो ॥ ॥ अथप्रसूतिगोपाय ॥ ॥ मृतिकोप्रद्वेजातेकिरातारिष्टवदेने
 ॥ ॥ सप्रपरिणिवकामुस्तातित्ककाचितपाचितम् ॥ तैलहंतिज्वरलेपास्तूतिकानानसशय ॥ ॥
 अस्याथ ॥ ॥ मृतिकासीकनजगुटिउपद्रनभयायीतेलपकाउवकणातितीनिमचंदनम
 रिडवकीमौथ्याकुरुकियतिऔसधिसमभागगरिकाथमातेलघालुतवकल्फदुदघाली
 सिद्धहोतवमर्दनगर्भजरहरप्रसूतीवायुहरसंशयहैन ॥ ॥ शिरिषपिपलचरिडएति
 कापातकारसलेस्नानगरिप्रसूतिजरहर ॥ ॥ विशालाज्यपटीभूक्तालैपतोयीनिशूलह
 व ॥ ॥ अस्यार्थ ॥ ॥ इद्रागिकोजरौघ्यदुदवाइकनयीनिविसेलपगरितीनिशूलहर ॥ ॥
 शर्कराकुट्टमृदिकलोषथरिकणामधु ॥ ॥ यंगुसाशिराक्तचंदनसमभागत ॥ ॥ एभि
 गदेमचसर्पिशिलेमधुनिक्षिपत्थासकामतथाशूलहद्रोगभृक्कट्टके ॥ ॥ कामसं
 द्रोगवविष्टमहनिमीजनात् ॥ ॥ कालभ्योपिप्रदातव्यप्रजावलविवर्देनम् ॥ ॥ अथ

५॥ ॥ भाग १ घाटु भाग १ कुत भाग १ गो हनि दाक्षा भाग १ लो व भाग १ शुठी भाग १ पिप
 ला भाग १ मधु भाग १ माल का गुणि भाग १ को रुपा डो भाग १ पर क चंदन रति औ यध
 गाड को घू पका उ बु शित ल भया मधु घालु त व भोजन सित या चर निको रोग डार
 क रा का सक न शुल क रा ह द य रोग क न मूत्र क क्षे क न क मल वा यु क रा पां दु रोग क
 र म क रा दु र गर वाल क ला ड प नि द वा व च वु द्वि व ड त व ल व डी व ॥ ॥ यो नि शूल
 पा मा गं स मु दू वान् ॥ सा द मूल प्र ले पे न यो नि म धे न स स य ॥ ॥ अथ ॥ ॥ अथ
 ए कार म ले पे गं तु यो नि वि वि यो नि शूल हर स स य ना दि ॥ ॥ ऐ र ड तै ल स यु क्तं तु ॥ इ सु त प्र
 च सृ त ना दि री यो नि शूल प्र र्पा म्प ति ॥ ॥ अथ ॥ ॥ मु डि ला का ज रा पि शि चार ड का तै ल
 ले मु डि भ र्ग प्र मु ति भ या कि सि का यो नि ले पे गं तु यो नि शूल हर ॥ ॥ घृ त सित मा सा शु जी या
 घा तु प डि ता तो वा नि पि तु यो नि शूल हर ॥ ॥ यो नि शूल हर पि त स र्पि का यो स वि ज यु क ॥ ॥
 प्रा सु भा से न वा प कं तै ल यो नि नि ले प ना ॥ ॥ क पा स का कि ज पि सि घृ त ले मु डि यो नि ले पे गं
 तु यो नि शूल हर ॥ ॥ किं वा मु सा का शूल तै ल प का ड यो नि ले पे गं तु यो नि शूल हर ॥ ॥ अथ
 दु ग्ध व र्द न म् ॥ ॥ शालि त दु ल पि हे त दु ग्ध पि ते न यो यि तां भू रि दु ग्ध वि वे स प्र दि न क्षी रा न
 भोज नात् ॥ ॥ अथ ॥ ॥ शालि घा न का वा ज न को पि डि दू द शि न हा लि पि तु सि क न हु त
 दू द ही शा त दि न स म्म दु द भा त प थ या तु ॥ ॥ भू मि कु क्मां द मू ला ना द ग्ध पी ते र स सि य ॥ ॥
 प यो ध र प यो भू रि मु च तु चै र्य था घ्न ॥ ॥ अथ ॥ ॥ भू मि कु मि डा का ज रा पि सि दू द सित
 पि तु सि ले दू द मा हा व हु त दु द हो ॥ ॥ ज स्ती प यो ध र सै य व रं दू त तै ले दू द व रं ॥ ॥ अथ सन

[illegible]

गर गलो मुकवाति हो गस्ताल क्षणा हुन अपराह विसेव रूपादि सा पाच दिन बलि दो न दिनु मुख
 हो ॥ चतुर्थे दिवसे मासे वर्ये गृहाति वालक म ॥ भिषगा म्या म हो गे दो यो गि गि सु ख म डो ॥
 नया गृहित मात्र प्रथम जाय ते ज्वर ॥ आस का सो भुवि गात्र भौ गी दुवल ते गित म ॥ दक्षिणी
 दिम मा श्रीत्य पंचगात्रि वति क्षिपेत् ॥ अस्यार्थ ॥ चौथा दिन मास वर्य भीषणा म्या नाट्य
 पाकियोगिनि वालक कन पक डउ सले पक डामात्र वालक कन जगे हो आस हो का सो ला
 विही देह दु टि आ वहु वल हो ये ति विह दु र दक्षिणा दि सा पाच रात्रि बलि दिनु मुख हो ॥
 मे दिवसे मासे वर्ये गृहाति वालक ॥ विडालिना मत दू स चक्षा थूल ज गी भुवि
 दि दक्षिणे त दक्षिणे ॥ अस्यार्थ ॥ पाच दिन मास वर्ये विडालिना उग च
 कन य सगर ॥ चक्षरोग हो जगे हो अरु विहो गात्र दु टि आ वये स्ताल क्षणा हुन दक्षिणा दि सा व
 लि दिनु न को हो ॥ यष्टे च दिवसे मासे वर्ये गृहाति वालक ॥ योगिनि शाकने च सुवास को हो
 हो भुवि जगे हो नेत्र पिडा हो यस्ताल क्षणा हुन पाच रात्रि क रूपादि सा वलि दिनु मुख हो ॥ सप्तमे
 दिवसे मासे वर्ये शुक्रा भिषा शिशु ॥ गृहाति रोदन शौखी ज्वर क पा दिरोदन तक्षणा म ॥ पश्चिमे
 पंचगात्र च वलो दक्ष शिशु मुख ॥ सात दिन मास वर्ये शुक्रा ना उग पाकियोगिनि वालक प
 क उन ये स्ता विह दु न प हुत रोदन गर शौख हो ज्वर हो क पा हो यस्ताल क्षणा हुन प श्री म दि सा पा
 च रात्रि वलि दिनु वालक सुयि हो ॥ अष्टमे दिवसे मासे वर्ये गृहाति वालक ॥ जंभवा गृहि
 मात्र प्रथम जाय ते ज्वर ॥ शिरः पिडा क्षिरो ग श्व चक्षु नोत्पा दि वेष्टित ॥ दक्षिणी दिशि मा
 भित्य वलि ये पद दाय येत् ॥ अस्यार्थ ॥ अष्टम दिन मास वर्ये विसे जंभवाना म कियोगि
 नि वालक कन लाग यस्ताल क्षणा हुन ॥ पहिलि ज्वर हो शिरः पिडा हो नेत्र हो ग हो दक्षिण दि सा
 विसे दे विला ड वलि दिनु वालक न को हो ॥ नवमे दिवसे मासे वर्ये गृहाति वालक ॥ अर्जि

